बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय सात

परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण : वास्तविकताओं को समझना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:27) 5

II. परमेश्वर 5

A. अधिकार (5:00) 5

1. परम (5:35) 6

2. विशिष्ट (8:54) 6

3. व्यापक (10:08) 7

B. नियंत्रण (11:37) 7

1. स्वायत्त (12:14) 7

2. नैतिक (17:56) 8

C. उपस्थिति (20:25) 9

1. वाचायी राजा (20:43) 9

2. देहधारी प्रभु (24:16) 9

3. सेवा करने वाला आत्मा (27:31) 10

III. सृष्टि (33:47) 11

A. गैरलौकिक (35:21) 12

1. निवासी (36:52) 12

2. आत्मिक युद्ध (43:23) 13

B. प्राकृतिक (46:14) 14

1. सृष्टि (46:26) 14

2. पतन (48:30) 14

3. छुटकारा (51:35) 15

IV. मानवजाति (56:26) 16

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. समाज (56:45) 16
1. एकजुटता (57:14) 16
2. समानता (1:08:22) 19
3. समुदाय (1:10:51)....20

B. व्यक्तिगत लोग (1:16:08) 21
1. चरित्र (1:17:03)....21
2. अनुभव (1:18:06) 22
3. शरीर (1:20:48) 22
4. भूमिकाएं (1:24:21)....23

V. उपसंहार (1:27:15) 23

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 24

उपयोग के प्रश्न 29

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

नैतिक निर्णय लेना एक व्यक्ति द्वारा एक परिस्थिति पर परमेश्वर के वचन को लागू करना होता है।

वास्तविकताएं अस्तित्व में रहने वाली सब बातों को सम्मिलित करती हैं।

II. परमेश्वर

परमेश्वर हमारी परिस्थिति की परम वास्तविकता है क्योंकि वह हर अन्य वास्तविकता को अस्तित्व और अर्थ प्रदान करता है।

A. अधिकार (5:00)

शासन करने का परमेश्वर अधिकार इस वास्तविकता से निकलता है कि परमेश्वर सारी सृष्टि का रचनाकार और चलानेवाला है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. परम (5:35)

परमेश्वर की उस पर संपूर्ण और पूरी स्वतंत्रता है जिसकी उसने रचना की है।

परमेश्वर के पास है कि वह अपनी सृष्टि के साथ जो चाहे सो करे :

- उसके साथ जैसा उसे उपयुक्त लगे वैसा व्यवहार करे
- जो वह चाहे उसकी मांग करे
- अपने स्तरों के अनुसार उसका न्याय करे

2. विशिष्ट (8:54)

केवल परमेश्वर के पास परम अधिकार है।

परमेश्वर का अधिकार सदैव सृष्टि के अधिकार से श्रेष्ठ है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. व्यापक (10:08)

परमेश्वर का अधिकार यह हर रूप में उन सब पर लागू होता है जिसकी उसने रचना की है :

- सारे प्राणी परमेश्वर के अधिकार में हैं
- सृष्टि का एक भी पहलु नैतिक रूप से उदासीन नहीं है

B. नियंत्रण (11:37)

परमेश्वर सामर्थशाली रूप से सारी सृष्टि का संचालन करता है।

1. स्वायत्त (12:14)

परमेश्वर के पास जैसे वह उचित समझता है वैसे सृष्टि पर नियंत्रण करने की असीमित योग्यता व असीमित अधिकार है।

मुक्त ईश्वरवाद सिखाता है कि हमारे नैतिक निर्णयों और व्यवहार के लिए यदि परमेश्वर को मनुष्यों को जिम्मेदार ठहराना है, तो मनुष्यों के पास उनके जीवनों पर परम अधिकार होना चाहिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का स्वायत्त नियंत्रण मानवीय जिम्मेदारी के साथ पूरी तरह से अनुकूल है।

परमेश्वर का स्वायत्त नियंत्रण नैतिक जिम्मेदारी का आधार है।

2. नैतिक (17:56)

सृष्टि नैतिकता के प्रति सहायक है।

परमेश्वर सदैव पाप से बचने के माध्यम और अवसर प्रदान करता है।

परिस्थितियां कभी अनैतिक विकल्पों को अनदेखा नहीं करतीं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. उपस्थिति (20:25)

1. वाचायी राजा (20:43)

हमारे पहले माता-पिता वासल राजा थे जिनका कार्य सारी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को फैलाना था।

परमेश्वर प्रकट रूप में उपस्थित था :

- उनको आशीष देने के लिए जब वे विश्वासयोग्य रहते थे
- श्राप देने के लिए भी जब उन्होंने पाप किया

सारी पृथ्वी और उसके निवासियों पर अपने निर्णयों को लागू करने के लिए परमेश्वर यहां है।

2. देहधारी प्रभु (24:16)

जब यीशु का जन्म हुआ तो परमेश्वर शारीरिक रूप से उपस्थित हो गया और हम में से एक के समान समाज में रहा।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

देहधारण के नैतिक परिणाम :

- क्षमा

- प्रत्यक्ष अनुकंपा

- धार्मिकता का प्रारूप

- नैतिक विजय

3. सेवा करने वाला आत्मा (27:31)

जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ तो उसने अपना आत्मा कलीसिया पर उंडेला।

a. भीतर वास करना

पवित्र आत्मा विश्वासियों के भीतर वास करता है, और नैतिक निर्णय लेने में हमारी सहायता करता एवं उत्साहित करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परन्तु जब पवित्र आत्मा हमें नया जीवन देता है, तो वह हमें नैतिक योग्यता भी देता है ताकि हम भले कार्य कर सकें।

b. वरदान

पवित्र आत्मा विश्वासियों को कलीसिया की सेवा के लिए अलौकिक सामर्थ के वरदान भी देता है।

पिन्तेकुस्त के दिन से कलीसिया के हर विश्वासी को आत्मिक वरदान दिया गया है।

III. सृष्टि (33:47)

तीन आधारभूत क्षेत्र :

- अलौकिक क्षेत्र (प्रकृति से ऊपर) — परमेश्वर और उसके कार्य
- प्राकृतिक — वह संसार जो परमेश्वर ने उत्पत्ति 1 में रचा था
- गैरलौकिक (प्रकृति से परे) — वह क्षेत्र जिसमें स्वर्गदूत और दुष्टात्माओं जैसी अदृश्य आत्माएं रहती हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. गैरलौकिक (35:21)

आधुनिक मसीही, विशेषकर पाश्चात्य संस्कृतियों में, प्रायः स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं पर बहुत ही कम ध्यान देते हैं।

1. निवासी (36:52)

स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं में बुद्धि होती है और वे ऐसे विवेकपूर्ण प्राणी हैं जिनमें इच्छाएं और व्यक्तित्व पाए जाते हैं।

ये सब प्राणी मूल रूप से सब स्वर्गदूत थे।

a. स्वर्गदूत

स्वर्गदूत परमेश्वर के वफादार संदेशवाहकों या दूतों के रूप में कार्य करते हैं। वे उसकी बातों को मनुष्यों को बताते हैं, और वे मानवजाति के साथ बातचीत करते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मानवजाति के लिए परमेश्वर के उद्धार को देखने के द्वारा स्वर्गदूत प्रभु की महिमा को और अधिक रूप से समझते हैं और उसकी स्तुति और अच्छी तरह से कर सकते हैं।

b. दुष्टात्माएं

दुष्टात्माएं पाप में गिरे हुए विद्रोही दूत हैं।

दुष्टात्माएं प्राकृतिक क्षेत्र के साथ संबंध बना सकती हैं, जो वे हमें हानि पहुंचाने के लिए करती हैं।

2. आत्मिक युद्ध (43:23)

जब से शैतान और शेष दुष्टात्माओं ने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया है, तब से वे परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों से युद्ध में लगे हुए हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने दुष्टात्माओं की हम पर विजय पाने की शक्ति को तोड़ डाला है।

दुष्टात्माएं तब तक हम पर आक्रमण करती रहेंगी जब तक परमेश्वर अंत के दिन उनका न्याय नहीं कर देता।

B. प्राकृतिक (46:14)

1. सृष्टि (46:26)

मानवजाति :

- पृथ्वी पर केन्द्रिय महत्व रखती है
- मानवजाति प्रकृति का ही भाग है
- प्रकृति की अधिकारी और स्वामी है

2. पतन (48:30)

जब आदम और हव्वा पाप में गिरे, तो परमेश्वर ने मानवजाति और पृथ्वी दोनों को श्राप दिया, और उन्हें भ्रष्टता के अधीन कर दिया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रकृति है :

- परमेश्वर के श्राप को पाने वाली
- परमेश्वर के श्राप का माध्यम

पृथ्वी आज भी परमेश्वर की भलाई और उसके वैभव की घोषणा करती हैं, और परमेश्वर आज भी हमें बहुत सी अच्छी चीजें प्रदान करने के लिए इसका इस्तेमाल करता है।

3. छुटकारा (51:35)

छुटकारे में पतन के प्रभावों को उलट दिया गया। फिर प्राकृतिक क्षेत्र :

- छुटकारे का कारण बन जाता है
- छुटकारे को प्राप्त करने वाला बन जाता है

परमेश्वर प्राकृतिक संसार को बहुत महत्व देता है। अतः, हमें ध्यान देना चाहिए कि किस प्रकार हमारे चुनाव प्राकृतिक सृष्टि को प्रभावित करेंगे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. मानवजाति (56:26)

A. समाज (56:45)

1. एकजुटता (57:14)

परमेश्वर मानवजाति को एक संगठित समूह के रूप में देखता है।

a. संगठित कार्य

सांस्कृतिक आदेश — परमेश्वर की वह आज्ञा कि मानवजाति को मानवीय संस्कृति के विकास के माध्यम से पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बढ़ाना है।

परमेश्वर ने मानवजाति को एकसाथ मिलकर, एक संगठित रूप में यह कार्य दिया है।

लोग इस संगठित कार्य को पूरा करने में संपूर्ण मानवजाति के साथ सहयोग करें।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. संगठित असफलता

आदम और हव्वा ने अपने-अपने व्यक्तिगत कार्यों की अवहेलना की, और इसी प्रक्रिया में उन्होंने अपने संगठित कार्य की अवहेलना की।

पतन में व्यक्तिगत रूप आदम और हव्वा के पाप और उनके रिश्ते का टूटना भी शामिल था।

c. संगठित परिणाम

परमेश्वर की वाचा ने संचालित किया :

- आदम और हव्वा के साथ व्यक्तिगत लोगों के रूप में परमेश्वर के रिश्ते को
- सामूहिक रूप से आदम और हव्वा को
- प्रत्येक व्यक्ति को जो इस पृथ्वी पर रहा है या रहेगा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

एक अपराध ने मानवजाति के हर व्यक्ति को वाचायी श्रापों में डाल दिया।

इसका एकमात्र अपवाद यीशु था, जो आदम और हव्वा के वंश से जन्म लेने की सामान्य प्रक्रिया से नहीं आया।

क्योंकि हम पाप के द्वारा भ्रष्ट हैं :

- हमें सदैव अपने नैतिक बोध और भावनाओं पर ध्यान रखना है।
- मानवजाति उस रूप में सांस्कृतिक आदेश को पूरा नहीं करती जैसे परमेश्वर चाहता है।
- हमें हमारे उद्देश्यों और व्यवहारों को जांचना और साबित करना जरूरी है।

d. संगठित पुनर्निर्माण

सृष्टि के लिए परमेश्वर की योजना एक राज्य को बनाना है —एक नई सामाजिक संरचना एवं नए लोगों के साथ भरा हुआ एक समाज

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब यीशु लौटेगा, तो संगठित सामाजिक संरचनाएं भी पूरी तरह से छुटकारा प्राप्त करेंगी।

हमें ध्यान देना है :

- व्यक्तिगत छुटकारे पर
- परमेश्वर का भय मानने वाली सामाजिक संरचनाओं पर भी, जैसे परिवार, कलीसियाएं, और राष्ट्र

2. समानता (1:08:22)

पृथ्वी के प्रत्येक छोटे सामाजिक समूहों में आधारभूत समानताएं हैं जो समूह को एकसाथ बांधती हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे चारों ओर के लोगों के साझे अनुभवों के साथ हमारे व्यवहार को अनुकूल बना लेना हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

3. समुदाय (1:10:51)

a. प्रभाव

लोगों के निर्णय और कार्य प्रायः उनके चारों ओर के लोगों को प्रभावित करते हैं :

- नैतिक निर्णय और कार्य दूसरों को ऐसे प्रभावित करते हैं जिससे कि परमेश्वर की महिमा हो।
- अनैतिक निर्णय और कार्य दूसरों को ऐसे प्रभावित करते हैं जो पापों को बढ़ावा देते हैं।

हमें वैसे निर्णय लेने चाहिए जो :

- दूसरों को लाभ पहुंचाएं न कि चोट
- दूसरों को नैतिक रूपों में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करें

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. जिम्मेदारियां

हमारी एकदूसरे के प्रति बहुत सी भिन्न-भिन्न जिम्मेदारियां हैं।

एकदूसरे से प्रेम करने की हमारी जिम्मेदारी :

- संपूर्ण जीवनभर की है
- हमारे समय, धन, संपत्ति और हमारे जीवनों की भी मांग करती है
- हमारे सारे नैतिक निर्णयों में दिखनी चाहिए

B. व्यक्तिगत लोग (1:16:08)

ऐसे कई महत्वपूर्ण रूप हैं जिनमें प्रत्येक व्यक्ति अलग है :

1. चरित्र (1:17:03)

चरित्र — व्यक्तिगत प्रमुखताएं और परीक्षाएं एवं हमारी धार्मिकता जैसी बातें

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. अनुभव (1:18:06)

हम में से अधिकांश के अनुभव एकसमान होते हैं, परन्तु अनुभवों का संयोजन हर व्यक्ति में अलग-अलग होता है।

एक भाव में, हम सब परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने की परीक्षा का सामना करते हैं। परन्तु हम सब लोग अलग-अलग रूप में इस परीक्षा का अनुभव करते हैं।

3. शरीर (1:20:48)

हमारे शरीरों से जुड़ी ऐसी कई वास्तविकताएं हैं जो नैतिक परिस्थितियों में कार्यरत होती हैं :

- आयु
- योग्यताएं
- अयोग्यताएं
- आनुवांशिकता
- बौद्धिक योग्यताएं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे शरीरों से जुड़ी कुछ वास्तविकताएं हमारी नैतिक जिम्मेदारियों को प्रभावित करने के लिए अपर्याप्त हैं :

- पाप हमारे शरीरों में वास करता है और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनने से रोकता है।

- हमारे शरीरों में वास करने वाला पाप हमें हमारी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करता है।

जब हमारे शरीर हमारे लिए पाप करना सरल और प्राकृतिक बना देते हैं, तब भी वे हमें पापों से छुटकारा नहीं देते।

4. भूमिकाएं (1:24:21)

हम सबकी जीवन में अनेक भूमिकाएं होती हैं। हमारी प्रत्येक भूमिका हमें एक नई परीक्षा के सामने खड़ी करती है और हमारे समक्ष विशेष जिम्मेदारियों को रखती हैं।

V. उपसंहार (1:27:15)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. सृष्टि पर परमेश्वर के अधिकार का वर्णन कीजिए।

2. सृष्टि पर परमेश्वर के नियंत्रण का वर्णन कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. सृष्टि में परमेश्वर की उपस्थिति का वर्णन कीजिए।

4. हमारी नैतिक जिम्मेदारियों के विषय में परमेश्वर के अधिकार, नियंत्रण और उसकी उपस्थिति के क्या अर्थ हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. गैरलौकिक क्षेत्र और उसके निवासियों एवं एकदूसरे के साथ उनके परस्पर संबंध की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

6. प्राकृतिक क्षेत्र और उसके निवासियों का वर्णन कीजिए। समय के साथ-साथ प्राकृतिक क्षेत्र की परिस्थिति कैसे बदली है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. गैरलौकिक और प्राकृतिक क्षेत्रों की तुलना कीजिए और उनमें अंतर स्पष्ट कीजिए। तीन उदाहरण दीजिए कि वे एकदूसरे को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

8. एकजुटता, समानता और समुदाय के आधार पर नैतिक निर्णय लेने में मानवीय समाज के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. चरित्र, अनुभवों, शरीर और भूमिकाओं के आधार पर नैतिक निर्णय लेने में मानवीय वैयक्तिकता के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. परमेश्वर ने जिस बात की आज्ञा दी है उसके प्रति समर्पित होने से बचने के लिए लोग कैसे बहाने बनाते हैं? हम ऐसे बहाने क्यों बनाते हैं?

2. आप अपने एक मित्र को कैसे समझाएंगे कि परमेश्वर सृष्टि को कुछ ऐसे व्यवस्थित करता है कि हमारी परिस्थितियां कभी हमारे अनैतिक विकल्पों का बहाना नहीं बनतीं।

3. यह पहचानना क्यों महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर सारी सृष्टि पर नियंत्रण रखता है और मनुष्यजाति आज भी नैतिक रूप से जिम्मेदार है?

4. एक राजकीय न्यायी के रूप में हमारे साथ परमेश्वर की उपस्थिति किस प्रकार हमारे नैतिक निर्णय लेने में एक महत्वपूर्ण पहलू है?

5. मसीहियों को इस वास्तविकता के कारण राहत क्यों मिलनी चाहिए कि यीशु हमारा मध्यस्थ है?

6. धार्मिकता के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में हम यीशु की सांसारिक उपस्थिति से क्या सीख सकते हैं?

7. हमारे भीतर वास करने के अतिरिक्त, पवित्र आत्मा विश्वासियों को कलीसिया की सेवा के लिए अलौकिक सामर्थ के वरदान भी देता है। आत्मिक वरदानों के सही इस्तेमाल के विषय में इस उद्देश्य का क्या अर्थ है?

8. हम एक आत्मिक युद्ध में लगे हैं, परन्तु याकूब 1;14 कहता है कि हम अपनी बुरी अभिलाषाओं के कारण पाप में गिरते हैं। किस प्रकार हमारी पापमय अभिलाषाएं और हमारे शत्रु एक साथ काम करते हैं? हमारी पापमय अभिलाषाओं और हमारे शत्रुओं का सामना करने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

9. वर्णन कीजिए कि किस प्रकार आपके एक हाल के ही निर्णय ने दूसरों को प्रभावित किया? क्या इसने उन्हें लाभ पहुँचाया या हानि पहुंचाई? क्या इसने उन्हें और अधिक नैतिक रूप से व्यवहार करने के लिए उत्साहित किया या पाप करने के लिए?

10. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org